रजिस्ट्री सं० डी० (डी०)-72

REGISTERED No. D. (D)-72

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 202] नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, अक्तूबर 11, 1979/आश्विन 19, 1901

No. 202] NEW DELHI, THURSDAY, OCTOBER 11, 1979/ASVINA 19, 1901

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 अक्तूबर, 1979

सं० 3/6/79-पब्लिक.—पटना में 8 अक्तूबर, 1979 को प्रातः श्री जयप्रकाश नारायण के अचानक निधन से हमारे बीच से एक महान देशभक्त उठ गया है जिसका स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान और स्वतन्त्रता के बाद अपूर्व योगदान हमारे करोड़ों देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्थायी स्रोत बना रहेगा ।

श्री जयप्रकाश नारायण का जन्म बिहार (अब उत्तर प्रदेश) में सीताबदियारा के निकट 11 अक्तूबर, 1902 को एक साधारण परिवार में हुआ था । अपना उत्कृष्ट छात्र जीवन बीच में छोड़कर उन्होंने 1921 में महात्मा गांधी द्वारा संचालित प्रथम असहयोग आन्दोलन में भाग लिया । अगले वर्ष वे आगे अध्ययन के लिए अमरीका गए । लौटने पर उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर के पद का कार्यभार सम्भाला । परन्तु इस प्रकार का शैक्षिक जीवनयापन, उनकी अथक शक्ति, कार्यक्षेत्र और आजादी के प्रति उनकी उत्कट वचनबद्धता को परिलक्षित करने का पर्याप्त माध्यम नहीं था । उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के श्रम अनुसंधान विभाग का कार्यभार सम्भाला और 1932 में इसके महामंत्री बने । बाद में गांधी जी के मार्गदर्शन में स्वतन्त्रता के लिए चलाए गए अनवरत आन्दोलनों में भाग लेने के कारण वे अनेक बार देश की विभिन्न जेलों में रहे । रिहा होने पर, वे कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के मार्गदर्शक बन गए । दूसरे विश्वयुद्ध ने श्री जयप्रकाश नारायण को झकझोर दिया और शीघ्र ही वे भारतीय जनता के समक्ष, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने वाले एक महान योद्धा के रूप में सामने आये । स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान उनके द्वारा किए गए महान कार्य तथा जेलों में उनकी लम्बी अवधि की नजरबन्दी, राष्ट्र के इतिहास में अविस्मरणीय अध्याय के रूप में बने रहेंगे । अप्रैल, 1946 में, हिरासत से रिहा होने पर वे पुनः राष्ट्रीय जीवन के केन्द्र बिन्दु बन गए । ट्रेड यूनियन तथा समाजवादी आन्दोलन के साथ उनका सम्बन्ध आजादी के बाद भी बना रहा, परन्तु इस बीच उनमें एक सूक्ष्म परिवर्तन आ गया था । अत्याचार, अभाव और शोषण से मुक्ति उनके जीवन के स्थाई सिद्धान्त और लक्ष्य बने रहे । समाजवाद और लोकतन्त्र के प्रति उनकी आस्था और विश्वास निरन्तर अक्षुण्ण बने रहे और गांधीवादी मूल्यों तथा पद्धतियों के प्रति उनके गहरे लगाव से एक नये समन्वय का अभ्युदय हुआ जो नई आशा और विश्वास का स्रोत बना । दलगत राजनीति से विलगाव, किसी सरकारी पद के ग्रहण करने के प्रति उनकी अनिच्छा और सर्वोदय को एक साधन और साध्य के रूप में पूर्णतः स्वीकार कर लेना—इन बातों को उनके विचारों में हुए आध्यात्मिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में ही समझा जा सकता है ।

श्री जयप्रकाश नारायण ने कोई भी पद स्वीकार नहीं किया, लेकिन वे कार्यक्षेत्र से विमुख नहीं हुए । सर्वोदय के सन्देश के प्रचार और प्रसार के लिए उनका सतत प्रयत्न, 1960 के बाद के दशक के मध्य में बिहार में पड़े भयंकर सूखे के दौरान रचनात्मक कार्यों की उनके द्वारा पेश की गई मिसाल, राष्ट्रीय एकता में उनका अडिग विश्वास, नागालैण्ड में परिलक्षित उनकी सर्वाणयता, चम्बल घाटी के डाकुओं की

समस्या के भावनात्मक रूप से समाधान की आवश्यकता के प्रति उनका उत्साह, अनुसूचित जातियों और अन्य कमजोर वर्गों की स्थिति में सुधार करने के कार्यों में उनका सक्रिय सहयोग, हमारे पड़ोसी देशों के साथ मित्रता और सद्भाव के लिए उनकी जबरदस्त वकालत और इन सबके अतिरिक्त उनकी गहन मानवीयता और लोकतन्त्र के प्रति उनके नैतिक लगाव में, उनके सार्वजनिक जीवन के विस्तृत क्षेत्र, उनकी नैतिक आस्थाओं की विशुद्धता और अनेक दशकों में उनके द्वारा किये गए कार्यों में निहित निष्ठा की स्पष्ट झलक मिलती है । प्रभावती देवी के साथ उनका सर्वेदनशील सम्बन्ध स्वयं में गांधी जी के प्रभाव और नैतिक मूल्यों के प्रति उनकी गहरी आस्था की एक मोहक कहानी है । 1973 में उनकी मृत्यु का शोक श्री जयप्रकाश नारायण को भारी महान कार्यों से विचलित नहीं कर सका । बिहार में आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए उक्त आन्दोलन को भ्रष्टाचार, अत्याचार और सामाजिक अन्याय के उन्मूलन के लिए सम्पूर्ण क्रान्ति के लिए एक जनव्यापी राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप देने में उन्हें सफलता मिली । इसकी परिणति तब हुई, जब उन्होंने सरकार में किसी भी प्रकार की तानाशाही का विरोध करने के अभियान का नेतृत्व किया । जब जून, 1975 में आन्तरिक आपात स्थिति घोषित की गई तो वे सबसे पहले गिरफ्तार और नजरबन्द किए जाने वाले व्यक्तियों में से थे । उनकी मानसिक यातनाओं की झलक उनकी पुस्तक "जेल डायरी" में स्पष्ट रूप से मिलती है । अपनी रिहाई के बाद भारतीय राजनीति को नई दिशा देने और अधिकांश विरोधी पार्टियों को एक मंच पर लाने में उन्होंने महान पथप्रदर्शक का काम किया जिन्हें मार्च, 1977 के लोक सभा चुनावों में भारी सफलता मिली । देश के हित के लिए कष्ट सहन करने की उनकी क्षमता का परिचय उनके जीवन के अन्तिम वर्षों से मिलता है, जो गांधी जी के शब्दों में, अपूर्व था ।

लोकनायक जयप्रकाश नारायण के निधन से राष्ट्र ने एक विशाल नैतिक शक्ति और महान भूपुत्र खो दिया है । भारत की जनता और सरकार उनकी मृत्यु से अत्यन्त शोक विह्वल है । उनके विचार, उनके कार्य और उनके जीवन की पवित्रता चिरकाल तक देशवासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी और मार्गदर्शन करती रहेगी ।

टी० सी० ए० श्रीनिवासवरदन, सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th October, 1979

No. 3/6/79-Pub.—The sudden death in Patna of Shri Jayaprakash Narayan, in the early hours of the morning on the 8th October, 1979 has removed from our midst a great patriot whose unique contribution during the freedom struggle as well as after Independence will be a permanent source of inspiration to millions of our countrymen.

Born on the 11th October, 1902 near Sitabdiara in Bihar (now in Uttar Pradesh) in a family of modest means, Jayaprakash Narayan interrupted a promising scholastic career to participate in the first Non-Cooperation Movement launched by Mahatma Gandhi in 1921. The following year he went to the United States of America for further studies. On his return, he joined the Banaras Hindu University as Professor of Sociology but the academic line was not to be an adequate outlet for his tireless energy, range of action and passionate commitment to freedom. He assumed charge of the Labour Research Department of the Indian National Congress and became its General Secretary in 1932. The successive struggles for freedom launched under the guidance of Gandhiji found him incarcerated time and again in different jails of the country. On his release, he became the guiding star of the Congress Socialist Party. The outbreak of the Second World War threw J.P., as he came to be known affectionately to the people of India, into a relentless crusade against the British. His exploits in the course of the freedom movement and the long detention in jail will remain unforgettable chapters of the history of the nation. His release from custody in April 1946 brought him back to the centre of the national scene. His association with the trade union and socialist movement continued even after Independence but a subtle change had in the meanwhile taken place. Freedom from tyranny, from want and from exploitation remained the abiding philosophy and passion of his life. While his devotion to socialism and democracy continued without any reservation or diminution of intensity, his deep commitment to Gandhian values and methods brought about a new synthesis which became a well-spring of hope and confidence. His withdrawal from party politics, his unwillingness to assume any governmental office and his total acceptance of Sarvodaya as a means as well as an end can only be understood in the light of the spiritual transformation in his thinking.

Jayaprakash Narayan declined office but he did not renounce action. His continuous effort to spread the message of Sarvodaya, the example he set for constructive work during the severe drought which Bihar witnessed in the mid-sixties, his unshakable faith in national integration, his healing touch in Nagaland, his espousal of the need for an imaginative handling of the dacoits of the Chambal valley, his involvement in the amelioration of the conditions of the Scheduled Castes and other weaker sections, his bold advocacy of friendship and understanding with our neighbours, and above all his deep humanism and moral attachment to democracy, illustrate the enormous range of his public life, the transparency of his convictions and the integrity of his actions spread over several decades. His sensitive relationship with Prabhavati Devi is by itself a fascinating story of Gandhiji's influence and their own deep commitment to ethical values. The sorrow of her death in 1973 did not deter J.P. from his subsequent heroic endeavour. Spearheading the agitation in Bihar, he succeeded in converting it into a mass national movement for Total Revolution to eradicate corruption, tyranny and social injustice. This culminated in his leading a campaign opposing any form of authoritarianism in government. When internal emergency was declared in June, 1975 he was one of the first to be arrested and detained. The travails of his mind during this period have come out vividly in his book "Jail Diary". After his release, he took a pioneering part in giving Indian politics a new direction by bringing most of the opposition parties on a common platform which swept the Lok Sabha polls in March, 1977. The closing years of his life demonstrated vividly his capacity for undergoing suffering for the cause of the country which, as Gandhiji noted long ago, was unexcelled.

In the passing away of Lok Nayak Jayaprakash Narayan the nation has lost a great moral authority and a noble son. The people and the Government of India mourn his death with the most profound grief. His thoughts, his actions and the purity of his life will inspire and guide them for every.

T. C. A SRINIVASAVARADAN, Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVT. OF INDIA PRESS, RING ROAD, NEW DELHI-110064
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI-110054, 1979